154 P
601
M

1192
10|21

Prabhati Bahar in Hindi (2 copies)

प्रभाती बहार

हिंदुस्थानी

भाग २ रा.

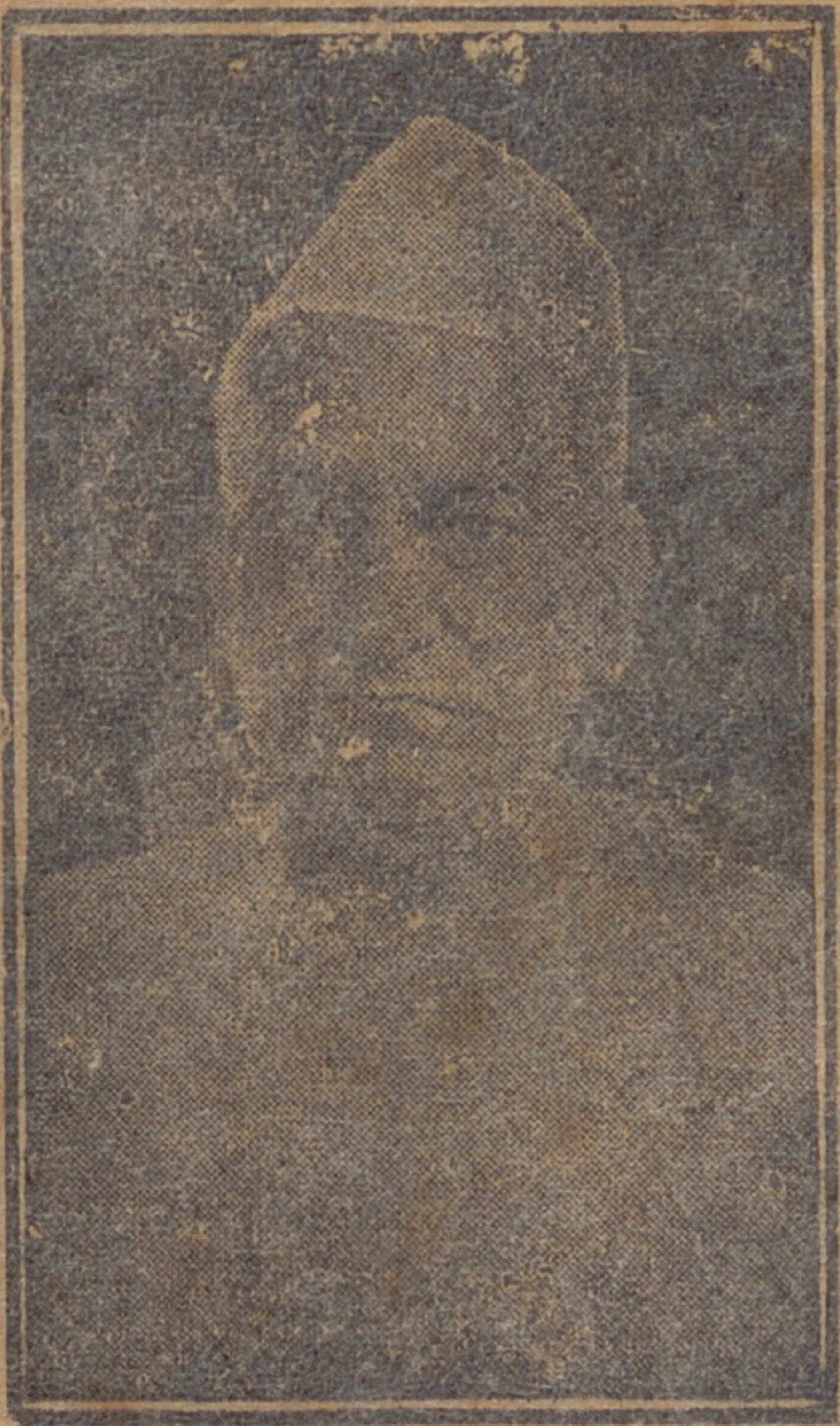

पी. बी. पाठक महात्मा एजन्सी मुंबई ४

किंमत १ आना

891.431 P 274 P

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
21 NOV. 1930

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 601
Date 15.12.71
GOVT. OF INDIA

मातृवन्दन

अय मातृभूमि तेरे चरणोंमे सर नमाऊं ॥
मै भक्ति भेट अपनी तेरी शरणमें लाऊं ॥ध्रु०॥
माथेपै तू हो चंदन छातीपै तूं हो माला ॥
जिव्हापै गीत तुम हो मै तेरा नाम गाऊं ॥ १ ॥
जिससे सुपूत उपजे गांधी तिलक जैसे ॥
उस तेरि धूलिको मै निज शीस पै चढाऊं ॥२॥
मानी समुद्र जिसकी धूलीका पान करके ॥
करता है मान तेरा उस पैराको मनाऊं ॥ ३ ॥
वे देश मानवाले चढकर उतर गये सब ॥
गोरे रहे न काले तुझकोहि एक पाऊं ॥ ४ ॥
सेवामें तेरि सारे भेदों को भूल जाऊं ॥
वह पुण्यनाम तेरा प्रतिदिन सुनूं सुनाऊं ॥ ५ ॥
तेरेही काम आऊं तेराहि मंत्र गाऊं ॥
मन और देह तुझपर बलिदान मै चढाऊं ॥६॥

चरका-खद्दर

भारतके प्यारे । अपना फर्ज स्वदेशी हय॥धृ०॥

कपडे मारे परदेशोंकूं। क्रोडों रुपिया जाते हय॥

दुष्काल पडा हय बडा देशमें । खानेकू नहि मिलता हय ॥ या भारत०

स्वतंत्रता तो चलगइ भाइ।भारत माता रोती हय॥

उसके लडके तयार होना । पलघडि दिन तो जाते हय ॥ या भारत०

स्वराज्य अपना हककरहा हय॥तिलकराजा बोला हय

उस जोडीमें चली स्वदेशी । श्रीगांधीजी कहते हय ॥ या भारत

असहकार ये महात्माजीने॥शांती युद्ध फुकारा हय

इस युद्धोमें खडा रहेना । हिंदीके जो लडके हय ॥ या भारत

दरिद्रतासे लढनेवाला सबसे भारी चरका हय ॥

इस चरकामें समजो भाइ। ये भारतकी उन्नती
हय ॥ या भारत०
असहकारका शांति युद्धमें। धुवेबाजी तोफा हय॥
इस तोफोंसे छुटती गोली। मॉंचिस्तर पें जाती
हय ॥ या भारत०
महात्माजी कहते सबकूं। धर्म हिंदका खादी हय॥
खादी बनाना खादी पेना। खादीका जय कहना
हय ॥ या भारत०

मर्द बनो.

मर्द बनो मर्द बनो। सब हिंदुस्तानी मर्द बनो।
सरकारी कानुन चुर करो। परदेशी हुमकत दूर
करो दुर ॥ १ ॥ हम मालीक हय अपने घरके।
औं दस्तन दाजी क्यों करते ॥ बस बंध करो
बंध करो। गुलामी खाना बंध करो मर्द ॥ २ ॥

आयाया ओ बनीआ होके। अब रखता हय बंदूक तोपे ॥ पार करो पार करो। पाजीको दर्रीया पार करो मर्द ॥ ३ ॥ बहेतर है पहने हथ कडीया। जौहरकी आई है घडीयां ॥ डरने वाले पेंनो चुडीया। डुब मरो डुब मरो मुछपाक जलमे डुब मरो ॥ ४ ॥ अब आग लगी हिंदु-स्थानमें। है कोन छूपेगा जो घरमें ॥ नाश करो नाश करो। गोरोको देश निकाल करो मर्द॥५॥ सब सपुत उठो साथ चलो। ए शासन को बर-बाद करो ॥ याद करो याद करो। जलीयां के जुल्मो याद करो मर्द ॥ ६ ॥ ए नादिर शाही नाश करो। खुद जलके उसके खाक करो ॥ कुद पडो कुद पडो। मैदाने जंगमें उछळ पडो मर्द ॥ ७ ॥ ए जुल्म नहीं हम सहलेंगे। जालीम को यहासे भगा देंगे ॥ दुर करो दुर करो। भारतसे उसकु दुर करो मर्द ॥ ८ ॥

सब हिंदुस्थानीं मर्द बनो.

-प्रेमसे नुकसान-

बहोत दिनोंतक काम किया। हमने मीठी बातोंसे॥
पार न हम पासके किंतु। गव्हर्मेंट जालीम के
घातोंसे॥ गाव गाव घर घर। यही चर्चा हम
फैलायेंगे॥ असहयोग के लिये हम। मरनेको
तैयार हो जायेंगे॥ न हमको ब्रिटिश गव्हर्मेंट।
जालीमसे मतलब है॥ न हमको उनके। राज-
पाटकी जरूरत है॥ अंगार लगो ये गुलामीपर।
नोकरशाही के उपर॥ करो बॉयकॉट गव्हर्मेंटका।
लगो स्वराज्य प्राप्तीको॥

—सरकारका धर्म—

तबदील गव्हर्मेंटकी रफतार न होगी।
गरकौम असयोगके लिये तैयार न होगी॥

बन जायेंगे हर शहरोंमे जलियानवाले बाग ।
इस मुल्कसे गर दूर ये सरकार न होगी ॥
ये जेलखाने टूटकर अब और बनेंगें ।
इनमें तमाम कौमगिरफतार न होगी ॥
ओ कौन हसीरे वतन होगा भला जिसपर ।
हसहसके फिदा जेलकी दीवार न होगी ॥
सौदाही है हमको दो लोहेकी बेडिया ।
सोनेके जेवरोमे ये झनकार न होगी ॥
जबतक इसके खूनसे सींचेंगे नही हम ।
खेती बतनकी दोंस्तों गुलजार न होगी ॥
हम ऐसी हुकमतको मिटा देगें मुजतरीब ।
गमे जो हमारे कभी गम ख्यार न होंगी ॥
तब दील गव्हमेंटकी रफतार न होगी ॥

(चाल--गजल)

कैसी आई हवा है जहानमे रे ।
अब तो होगा स्वराज्य हिंदुस्तानमे रे ॥
वीर जागे वीरनी भूमी जगी भारत जगा !
पुत्र तेरे जब जगे दिलपर कुल्हाडा जब चला॥
सिगरो पैसा गया है इंग्लिशस्तानमें रे॥कैसी०
हाय भारत तूं चमन था जब न ये जालिम कभी।
जबसे जालिम आगये हैरान है दुनिया सभी ।
झगडा होते है दर २ मकानमे रे ॥ कैसी०
अब महात्मा जग पडे मोती जवाहर मालवी ।
वोनरीमान चौकशी तैयब जो नेता सभी ।
कोई २ भेजे है जले दरम्यानमें रे ॥ कैसी०
डाक्टर सेरो बुखारी नायडू कमलावती ।
घारपुरे पोशा नाखवा है संगमें लीलावती ।
येतो करते है युद्ध महानमें रे ॥ कैसी०

[चाल—गझल कवाली]

पेहनके खादी हमतो । लेंगे स्वराज्य हमभी ॥
हरगीज ना छोडेगें हमतो । लेंगे स्वराज्य हमभी ॥

शेर

रेटींया फिरायो गे हमतो ॥
और सूतल कातेंगे हमतो ॥
कपडे बनायेगे हमतो ॥ लेंगे स्वराज्य हमभी । पे० ।
कहेंगा महात्माजी तो ॥
लढाई करगें हमतो ॥
मार खायेगे हमतो ॥ लेंगे स्वराज्य हमभी ॥ पे० ॥

गझल

धुम गांधीकी हैय भारतमे समरि मवला ॥
हाय जलीमने छुरी सखे चलाई मवला ॥
झेल जाते हुय सबको सुना के कहे दिया ॥
हाय धरासनाये अब हुंब चढाई मवला ॥ धूम ॥

॥ श्रीधन्वन्तरयेनमः ॥

मराठी भाषेत वैद्यकीचा सचित्र प्रचंड ग्रंथ.

वैद्यराज कृष्णशास्त्री भाटवडेकर कृत.

वैद्यसार संग्रह.

हा ग्रंथ सर डॉ. भालचंद्र यांचे वडील विद्वान वैद्यराज कृष्णशास्त्री भाटवडेकर, वैद्यराज रघुनाथ शास्त्री दाने व आयुर्वेद महोपाध्याय वासुदेवाचार्य ऐनापुरे यांनी उपयुक्त अनुभविक देशी औषधांची माहिती भरपूर देऊन तयार केला आहे. यांत रोगांचें निदान, स्त्रीरोग, बालरोग यांची चिकित्सा सगतवार दिली असून उत्तमोत्तम रसायनें, कर्म-विपाक, अनुपान, गर्भाची व इतर माहिती सचित्र असल्यानें देशी औषधांचा लोकमान्य ग्रंथ संग्रहीं अवश्य ठेवून डॉक्टरांची बिलें वाचवा व स्वतःच घरीं वैद्य बना. सवलतीची किंमत रुपये २॥. शिवाय पोष्ट व्ही. पी. खर्च माफ.

पी. बी. पाठक आणि कंपनी.

महात्मा एजन्सी, ठाकुरद्वार नाका,

गिरगांव रोड, मुंबई नं. ४.